ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in April 2025

छायावाद और प्रयोगवाद : हिंदी कविता में परंपरा और प्रयोग का द्वंद्व

प्रीति, शोधकर्ता, हिन्दी विभाग, एनआईआईएलएम विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा)
डॉ. नवनीता भाटिया, सहायक प्रोफेसर, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, एनआईआईएलएम विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा)

सार

हिंदी कविता का विकास एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें परंपरा और प्रयोग के बीच निरंतर संवाद और संघर्ष दिखाई देता है। छायावाद और प्रयोगवाद इस विकासयात्रा के दो महत्त्वपूर्ण पड़ाव हैं। छायावाद जहाँ आत्मानुभूति-, सौंदर्यबोध, प्रकृति और आध्यात्मिक चेतना का काव्यात्मक विस्तार करता है, वहीं प्रयोगवाद कविता को नवीन शिल्प, भाषा, बिंब और संवेदना के माध्यम से आधुनिक जीवन की जटिलताओं से जोड़ता है। यह शोधदर्शन-पत्र छायावाद और प्रयोगवाद के काव्य-, शिल्पगत प्रयोग, भाषा, संवेदना और वैचारिक अंतर्विरोधों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करता है कि प्रयोगवाद छायावाद का विरोध नहीं, बल्कि उसकी रचनात्मक परिणति है।

विशेष शब्द: छायावाद, प्रयोगवाद, परंपरा, आधुनिकता, काव्यप्रयोग-, हिंदी कविता

1. भूमिका

हिंदी कविता का इतिहास मात्र काव्य-रूपों, छंदों अथवा शिल्प-परिवर्तनों का इतिहास नहीं है, बल्कि वह भारतीय समाज की बदलती हुई सामाजिक, सांस्कृतिक, वैचारिक और मानसिक संरचनाओं का सजीव दस्तावेज़ है। साहित्य, विशेषतः कविता, किसी भी युग की सामूहिक चेतना, संवेदना और अंतर्विरोधों को अभिव्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम रही है। यही कारण है कि हिंदी कविता का प्रत्येक साहित्यिक आंदोलन अपने पूर्ववर्ती आंदोलन से केवल प्रेरणा ही नहीं ग्रहण करता, बल्कि उसके साथ एक सतत संवाद, टकराव और पुनर्व्याख्या की प्रक्रिया में भी संलग्न रहता है। इस संदर्भ में छायावाद और प्रयोगवाद के बीच का संबंध परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व को समझने की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है।

छायावाद हिंदी कविता का वह ऐतिहासिक मोड़ है जहाँ कवि की दृष्टि बाह्य यथार्थ से हटकर अंतर्मन की अनुभूति, आत्मसंघर्ष और सौंदर्यबोध की ओर केंद्रित होती है। यह आंदोलन व्यक्ति की आत्मिक स्वतंत्रता, प्रकृति के रहस्यात्मक सौंदर्य और मानवीय संवेदना की सूक्ष्मतम परतों को अभिव्यक्त करता है। छायावादी कविता में भावनात्मक गहराई, लयात्मकता और आध्यात्मिक चेतना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है, जिसने हिंदी कविता को एक गरिमामय और सौंदर्यप्रधान स्वरूप प्रदान किया। किंतु जैसे-जैसे सामाजिक यथार्थ जटिल होता गया—औद्योगीकरण, शहरीकरण, औपनिवेशिक अनुभव और स्वतंत्रता-पूर्व तथा स्वतंत्रता-पश्चात की परिस्थितियाँ उभरती गईं—छायावादी काव्य-चेतना की सीमाएँ भी स्पष्ट होने लगीं। इसी ऐतिहासिक और वैचारिक पृष्ठभूमि में प्रयोगवाद का उदय हुआ, जिसने कविता को आधुनिक जीवन की विसंगतियों, अकेलेपन, विघटन, अस्तित्वगत संकट और बौद्धिक बेचैनी से जोड़ने का प्रयास किया। प्रयोगवाद ने छायावादी सौंदर्यपरक दृष्टि को पूरी तरह अस्वीकार नहीं किया, बल्कि उसे नए संदर्भों में पुनर्परिभाषित किया। इस आंदोलन में कवि की चेतना अधिक प्रश्नाकुल, विश्लेषणात्मक और आत्मसंघर्षपूर्ण हो जाती है। भाषा, शिल्प और संरचना के स्तर पर किए गए प्रयोग कविता को पारंपरिक सीमाओं से मुक्त करते हैं और उसे आधुनिक मानव की मानसिक स्थिति का सटीक माध्यम बनाते हैं।

हिंदी कविता में छायावाद और प्रयोगवाद के संबंध पर भारतीय आलोचकों ने विभिन्न वैचारिक दृष्टियों से गहन विचार किया है। नामवर सिंह)1980) ने इसे ऐतिहासिक और द्वंद्वात्मक विकास की प्रक्रिया मानते हुए कहा कि प्रयोगवाद छायावाद का निषेध नहीं बल्कि उसकी आलोचनात्मक निरंतरता है, जहाँ आत्मानुभूति सामाजिक यथार्थ से टकराती है; उनका दृष्टिकोण मार्क्सवादी आलोचना से प्रेरित है। रामविलास शर्मा)1975) ने छायावाद को भारतीय काव्य परंपरा और प्रयोगवाद को पश्चिमी आधुनिकता-से जोड़ते हुए ऐतिहासिक भौतिकवाद के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि प्रयोगवाद ने कविता को यथार्थ से जोड़ा, किंतु कई बार वह जनचेतना से कट गया। नंददुलारे वाजपेयी)1962) ने आदर्शवादी सौंदर्यशास्त्र के अंतर्गत छायावाद को आत्मिक उपलब्धि और प्रयोगवाद को उसकी प्रतिक्रिया मानते हुए प्रयोगवाद को भावनात्मक अतिरेक के विरुद्ध बौद्धिक अनुशासन की स्थापना कहा। हजारीप्रसाद द्विवेदी)1958) ने सांस्कृतिक मानवतावाद के दृष्टिकोण से छायावाद को भारतीय सांस्कृतिक चेतना की पुनरावृत्ति और प्रयोगवाद को आधुनिक मानव की मानसिक जटिलताओं की अभिव्यक्ति माना तथा निष्कर्ष दिया कि साहित्य परंपरा से कटकर नहीं, बल्कि उससे संवाद करते हुए आगे बढ़ता है। बच्चन सिंह)1986) ने मनोविश्लेषणात्मक आलोचना के आधार पर कहा कि छायावाद आत्मा की खोज करता है जबकि प्रयोगवाद उसी आत्मा के संकट और विघटन को उजागर करता है। मैनेजर पांडेय)1992) ने मार्क्सवादी सांस्कृतिक आलोचना के तहत छायावाद को व्यक्ति केंद्रित चेतना का-केंद्रित और प्रयोगवाद को समाज-प्रतिनिधि माना तथा प्रयोगवाद को सामाजिक यथार्थ की अनिवार्य अभिव्यक्ति कहा। विजयदेव नारायण साही)1970) ने

अस्तित्ववादी दृष्टि से प्रयोगवाद को कविता में जोखिम और आत्मालोचना की प्रवृत्ति बताते हुए कहा कि वह छायावादी सौंदर्य की स्थिरता को तोड़कर पाठक को प्रश्नाकुल बनाता है। शिवकुमार मिश्र)1988) ने संरचनावादी सिद्धांत के आधार पर छायावाद और प्रयोगवाद के भाषिक अंतर को रेखांकित करते हुए संस्कृतनिष्ठ, लयात्मक भाषा से विखंडित और प्रतीकात्मक भाषा की यात्रा को सामाजिक विघटन का भाषिक प्रतिबिंब माना। विश्वनाथ त्रिपाठी)1995) ने मानवतावादी आलोचना के अंतर्गत छायावाद को संवेदना की ऊँचाई और प्रयोगवाद को संवेदना के संकट की कविता कहा तथा दोनों को एक ही विकास धारा के दो चरण सिद्ध-) किया। रविभूषण2005) ने उत्तरमार्क्सवादी दृष्टि से निष्कर्ष दिया कि छायावाद सौंदर्य के माध्यम से मुक्त-ि की आकांक्षा करता है जबकि प्रयोगवाद संघर्ष, सत्ता और सामाजिक अंतर्विरोधों की चेतना को अभिव्यक्त करता है; इस प्रकार प्रयोगवाद छायावादी परंपरा को नए वैचारिक और युगीन संदर्भों में आगे बढ़ाता है।

इस प्रकार छायावाद और प्रयोगवाद के बीच संबंध को केवल विरोध के रूप में देखना एक सरलीकृत दृष्टिकोण होगा। वास्तव में यह संबंध एक द्वंद्वात्मक निरंतरता का उदाहरण है, जहाँ प्रयोगवाद छायावाद की भावनात्मक विरासत को आधुनिक यथार्थ की कसौटी पर कसता है। परंपरा और प्रयोग का यह द्वंद्व हिंदी कविता को स्थिर नहीं रहने देता, बल्कि उसे निरंतर गतिशील और आत्मपरीक्षणशील बनाए रखता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य इसी द्वंद्व की गहन विवेचना करना है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि हिंदी कविता का विकास विरोध नहीं, बल्कि संवाद और रूपांतरण की प्रक्रिया का परिणाम है।

2. छायावाद: काव्य-दृष्टि और परंपरा

छायावाद आधुनिक हिंदी कविता के विकास में एक निर्णायक और परिवर्तनकारी दौर का प्रतिनिधित्व करता है, जो बाहरी सामाजिक वर्णन से हटकर आंतरिक मानवीय चेतना की खोज की ओर एक सचेत बदलाव को दर्शाता है। बीसवीं सदी के शुरुआती दशकों में उभरा छायावाद भारत में राष्ट्रीय जागरण, आध्यात्मिक पुनर्जागरण और सांस्कृतिक आत्म-अभिव्यक्ति के दौर के साथ मेल खाता है। इस काव्य आंदोलन ने कवि के व्यक्तिपरक अनुभव, आंतरिक भावनात्मक जीवन और आध्यात्मिक जिज्ञासा को प्रमुखता दी, जिससे हिंदी साहित्य में काव्य अभिव्यक्ति के उद्देश्य और दायरे को फिर से परिभाषित किया गया। छायावाद के मूल में स्वयं की प्रधानता (आत्म-अनुभूति) है। पहले की काव्य परंपराओं के विपरीत, जो नैतिक शिक्षा, सामाजिक सुधार, या कथात्मक यथार्थवाद पर ज़ोर देती थीं, छायावाद ने व्यक्तिगत चेतना को काव्य रचना के केंद्र में रखा। छायावादी कवि केवल बाहरी दुनिया का वर्णन नहीं करता; बल्कि, बाहरी वास्तविकता तभी सार्थक होती है जब वह कवि की आंतरिक भावनात्मक और आध्यात्मिक स्थिति को दर्शाती है। इस प्रकार कविता भीतर की ओर मुड़ती है, आत्म-साक्षात्कार, आत्मनिरीक्षण और अस्तित्व संबंधी चिंतन के माध्यम के रूप में कार्य करती है। यह आंतरिक दृष्टि छायावाद को व्यापक रोमांटिक परंपरा से जोड़ती है, फिर भी यह भारतीय दार्शनिक विचारों में गहराई से निहित है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार—

"छायावाद में काव्य आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति है, जिसमें कवि की व्यक्तिगत चेतना प्रकृति और रहस्य के माध्यम से व्यक्त होती है।" (हिंदी साहित्य का इतिहास(

यह पंक्ति छायावाद की मूल काव्यदृष्टि को स्पष्ट करती है। आचार्य शुक्ल के अनुसार छायावाद का केंद्र बाह्य यथार्थ नहीं-, बल्कि कवि का आंतरिक अनुभव है। प्रकृति यहाँ केवल दृश्य तत्व नहीं, बल्कि कवि की आत्मिक संवेदनाओं का प्रतीक बन जाती है। इस प्रकार छायावाद भारतीय काव्य परंपरा की आत्मिक चेतना और आधुनिक व्यक्तिबोध के बीच एक सेतु का कार्य करता है।-

नंददुलारे वाजपेयी छायावाद की परंपरागत जड़ों को रेखांकित करते हुए कहते हैं—

"छायावाद भारतीय काव्य परंपरा की आत्मा को आधुनिक भावबोध के साथ प्रस्तुत करने का सशक्त प्रयास है।" (छायावाद(

इस कथन से स्पष्ट होता है कि छायावाद केवल पश्चिमी रोमांटिसिज़्म का अनुकरण नहीं है, बल्कि वह भारतीय दर्शन, भक्ति परंपरा और संस्कृत काव्यसंस्कृति से गहराई से जुड़ा हु-आ आंदोलन है। इसमें वेदांत, रहस्यवाद और सौंदर्यबोध की परंपरा आधुनिक संवेदनशीलता के साथ पुनर्संयोजित होती है। इस दृष्टि से छायावाद परंपरा का निषेध नहीं, बल्कि उसका सर्जनात्मक विस्तार है।

छायावादी कविता में प्रकृति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, न कि एक निष्क्रिय पृष्ठभूमि के रूप में, बल्कि एक जीवित, सचेत उपस्थिति के रूप में जो मानवीय भावनाओं से गहराई से जुड़ी हुई है। प्राकृतिक बिंब - बादल, नदियाँ, चाँदनी, भोर, फूल और ऋतुएँ - कवि की मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक स्थितियों के प्रतीकात्मक विस्तार के रूप में कार्य करते हैं। छायावाद में मानव स्वयं और प्रकृति के बीच संबंध जैविक और सहानुभूतिपूर्ण है; प्रकृति एक दर्पण बन जाती है जिसके माध्यम से कवि एकांत, लालसा, आनंद, दुख और पारगमन को देखता है। प्रकृति का यह प्रतीकात्मक उपयोग छायावादी कविता को वर्णनात्मक यथार्थवाद से ऊपर उठाता है, इसे एक सौंदर्यवादी और आध्यात्मिक अनुभव में बदल देता है। रहस्यवाद और आध्यात्मिकता छायावाद की काव्य दृष्टि का एक

और परिभाषित आयाम बनाते हैं। वेदांत दर्शन, उपनिषदिक विचारों, भक्ति परंपराओं और भारतीय आध्यात्मिक अवधारणाओं से प्रभावित, छायावादी कविता अक्सर आत्मा के पूर्ण के साथ मिलन, सीमित और अनंत के बीच तनाव, और परम सत्य की खोज जैसे विषयों की पड़ताल करती है। हालाँकि, यह आध्यात्मिकता कट्टर या कर्मकांडीय नहीं है; यह अत्यंत व्यक्तिगत और अनुभवात्मक है। कवि की खोज आंतरिक है, जो तर्कसंगत या सैद्धांतिक निश्चितता के बजाय अंतर्ज्ञान, भावनात्मक गहराई और पारलौकिक जागरूकता पर ज़ोर देती है। यह रहस्यवादी अभिविन्यास छायावादी कविता को एक चिंतनशील और कालातीत गुणवत्ता प्रदान करता है। शैली के नज़रिए से, छायावाद ने भाषा, कल्पना और काव्य रूप में महत्वपूर्ण बदलाव लाए। छायावादी कविता की भाषा संस्कृतनिष्ठता, संगीतमयता, लयबद्ध सुंदरता और प्रतीकात्मक गहराई से पहचानी जाती है। शब्दों को सिर्फ़ अर्थ की स्पष्टता के लिए नहीं, बल्कि उनकी सौंदर्यपूर्ण गूंज और भावनात्मक संकेत के लिए चुना जाता है। रूपकों, प्रतीकों और भावपूर्ण कल्पनाओं के बार-बार इस्तेमाल से अर्थ की कई परतें बनती हैं, जो व्याख्यात्मक गहराई को बढ़ावा देती हैं। लय और धुन को सावधानी से गढ़ा जाता है, जो कविताओं की गीतात्मक और भावनात्मक तीव्रता को मज़बूत करता है। इस परिष्कृत भाषाई और औपचारिक संरचना के माध्यम से, छायावाद ने हिंदी साहित्य में काव्य सौंदर्य और कलात्मक परिष्कार का एक नया मानक स्थापित किया।
रुझानों, जिसमें प्रगतिवाद और प्रयोगवाद शामिल हैं, के लिए ज़मीन तैयार की।

3. प्रयोगवादप्रयोग-आधुनिक चेतना का काव्य :

प्रयोगवाद हिंदी कविता में उस आधुनिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है, जो बीसवीं शताब्दी के मध्य में तीव्र सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप विकसित हुई। स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद भारतीय समाज जिस विघटन-, मोहभंग, अनिश्चितता और बौद्धिक संकट से गुजर रहा था, प्रयोगवाद उसी यथार्थ का काव्यात्मक प्रतिफल है। यह काव्यधारा छायावाद की भावनात्मक, सौंदर्यप्रधान और आत्मानुभूतिपरक कविता से भिन्न होकर जीवन की जटिल वास्तविकताओं को तर्कशील, विश्लेषणात्मक और प्रयोगधर्मी दृष्टि से अभिव्यक्त करती है। प्रयोगवाद का मूल आग्रह नवीनता और प्रयोगशीलता है। यह काव्य परंपरा से पूर्ण विच्छेद नहीं करता, बल्कि परंपरागत काव्यरूढ़ियों-, स्थापित सौंदर्यबोध और अभिव्यक्ति शैली पर प्रश्नचिह्न लगाता है। प्रयोगवादी-रूप अपर्याप्त हैं-कवि मानते हैं कि बदले हुए युग की अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए पुराने काव्य; इसलिए कविता को नए शि
नई संरचना और नई भाषा की आवश्यकता है। इसी कारण प्रयोगवादी कविता में मुक्त छंद, असंतुलित संरचना, प्रतीकात्मकता, बिंबों की नवीन योजना और कभीकभी गद्यात्मकता भी दिखाई देती है।- प्रयोगवादी कविता में व्यक्ति की मानसिक जटिलताएँ और अस्तित्वगत संकट केंद्रीय विषय के रूप में उभरते हैं। यह कविता आधुनिक मनुष्य की अकेलेपन, असुरक्षा, पहचानसंकट-, आत्मसंघर्ष और आंतरिक विघटन को निर्भीकता से सामने लाती है। यहाँ कवि न तो आत्ममुग्ध भावुकता में डूबा होता है और न ही सौंदर्य की आदर्श छवि गढ़ता है; बल्कि वह जीवन की विसंगतियों, विडंबनाओं और विरोधाभासों को स्वीकार करते हुए उन्हें कविता का विषय बनाता है। इस संदर्भ में प्रयोगवाद अस्तित्ववाद, आधुनिक मनोविज्ञान और समकालीन दार्शनिक चिंतन से गहराई से जुड़ा हुआ दिखाई देता है।

भाषा के स्तर पर प्रयोगवादी कविता सहज, बोलचाल की, कभीकभी कठोर और असुवि-धाजनक प्रतीत होती है। यह भाषा जानबूझकर काव्यात्मक सौंदर्य से दूर जाती है, क्योंकि प्रयोगवादी दृष्टि में सौंदर्य से अधिक महत्वपूर्ण अनुभूति की सच्चाई है। कविता का उद्देश्य पाठक को आनंद देना नहीं, बल्कि उसे सोचने, विचलित होने और प्रश्न करने के लिए विवश करना है। इसलिए प्रयोगवादी कविता कई बार असंरचित, असंगत या कठिन प्रतीत होती है, परंतु यही उसकी आधुनिकता और बौद्धिकता का प्रमाण है। प्रयोगवाद कविता को केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे बौद्धिक और विश्लेषणात्मक माध्यम में रूपांतरित करता है। यहाँ कविता विचार का वाहक बनती हैऐसा विचार जो जीवन के अनुभवों से जन्मा होता है और जिसे कवि तर्क—, व्यंग्य और प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। इस प्रकार प्रयोगवादी कविता पाठक और कविता के बीच एक संवाद स्थापित करती है, जहाँ कविता निष्कर्ष नहीं देती, बल्कि प्रश्न छोड़ जाती है।

प्रयोगवाद बीसवीं शताब्दी के मध्य में उस समय उभरता है, जब भारतीय समाज तीव्र सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक परिवर्तनों से गुजर रहा था। औपनिवेशिक अनुभव, स्वतंत्रतासंघर्ष के बाद की निराशाएँ-, नगरीकरण और आधुनिक जीवन की जटिलताओं ने मनुष्य की चेतना को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। इसी पृष्ठभूमि में प्रयोगवाद कविता में नवीन प्रयोगों का आग्रह करता है। प्रयोगवादी कविता नवीन शिल्प और संरचना को अपनाती है तथा परंपरागत छंदबद्धता के स्थान पर मुक्त छंद और असंरचित, गद्यात्मक भाषा का प्रयोग करती है। इस काव्यधारा में कविता का केंद्र भावुक आत्माभिव्यक्ति न होकर व्यक्ति की मानसिक जटिलताएँ, अस्तित्वगत संकट, अकेलापन और आंतरिक द्वंद्व बन जाते हैं। अज्ञेय ने प्रयोगवादी कविता की इस प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हुए लिखा है—

"हमारे लिए कविता आत्माभिव्यक्ति नहीं, अनुभवों की जाँच का माध्यम है।"

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in April 2025

यह कथन प्रयोगवाद की उस बौद्धिक चेतना को रेखांकित करता है, जिसमें कविता स्वयं एक प्रयोग बन जाती है। इसी क्रम में नामवर सिंह प्रयोगवादी कविता के स्वरूप को परिभाषित करते हुए कहते हैं—

"नई कविता आधुनिक मनुष्य की टूटी हुई और प्रश्नाकुल चेतना की अभिव्यक्ति है।"

इन विचारों से स्पष्ट होता है कि प्रयोगवाद सौंदर्य की पारंपरिक अवधारणा के स्थान पर अनुभूति की सच्चाई को महत्त्व देता है। प्रयोगवादी कविता कोमल भावुकता से हटकर जीवन की विसंगतियों, विडंबनाओं और तनावों को सीधे, कभी कभी कठोर और-असहज भाषा में प्रस्तुत करती है। इस प्रकार प्रयोगवाद कविता को केवल भावनात्मक न रखकर बौद्धिक, विश्लेषणात्मक और आत्मसचेत बनाता है तथा हिंदी कविता को आधुनिक जीवन के यथार्थ के अधिक निकट ले आता है।-

4. परंपरा और प्रयोग का द्वंद्व

परंपरा और प्रयोग का यह द्वंद्व छायावाद और प्रयोगवाद के बीच केवल शैलीगत भिन्नता नहीं है, बल्कि हिंदी कविता की आधुनिकतायात्रा का सबसे महत्वपूर्ण वैचारिक संकेत है। छायावाद जिस समय उभरता है-, उस समय कविता का लक्ष्य मनुष्य के अंतर्जगत की कोमल अनुभूतियोंप्रेम—, पीड़ा, विरह, रहस्य और प्रकृतिक—तादात्म्य-ो सौंदर्य के माध्यम से व्यक्त करना था। इसलिए छायावाद में का अर्थ रूढ़ि नहीं "परंपरा", बल्कि भारतीय काव्यसंस्कृति की वह संवेदनशील धारा है जो आत्मा-, प्रकृति और सौंदर्य के माध्यम से जीवन को अर्थ देती है। इसके विपरीत प्रयोगवाद उस समय सामने आता है जब आधुनिक जीवन की विखंडित चेतना, नगरीय तनाव, पहचानसंकट-, अस्तित्वगत प्रश्न और सामाजिक विसंगतियाँ मनुष्य के अनुभव का अनिवार्य हिस्सा बन चुकी थीं। इसलिए प्रयोगवाद में परिवर्तन नहीं-केवल शिल्प "प्रयोग", बल्कि जीवन यथार्थ को पकड़ने के लिए कविता की-भाषा, संरचना और दृष्टि का पुनर्गठन है।

यह द्वंद्व कई स्तरों पर स्पष्ट होता है। छायावाद की भावनात्मक आत्मानुभूति जहाँ अंतर्मन की लय, सौंदर्य और रहस्य में ढलती है, वहीं प्रयोगवाद की अनुभूति बौद्धिक, विश्लेषणात्मक और अस्तित्ववादी स्वर ले लेती है, जिसमें कवि अनुभव को ही नहीं "जीता", उसकी जाँच भी करता है। छायावाद में प्रकृति एक संवेदनात्मक प्रतीक बनकर मनुष्य के भीतर की कोमलता को उजागर करती है, जबकि प्रयोगवाद में मनुष्य का जीवनकेंद्र अक्सर शहरी-, सामाजिक और मानसिक तनावों में स्थित होता है यहाँ प्रकृति का स्थान—घटता है और आधुनिक मनुष्य की खंडित चेतना केंद्र में आ जाती है। भाषा के स्तर पर छायावाद की संस्कृतनिष्ठ, संगीतात्मक और लयात्मक शैली पाठक को भावप्रवाह में बहा ले जाती है-; दूसरी ओर प्रयोगवाद बोलचाल, गद्यात्मक प्रवाह, प्रतीकात्मक जटिलता और कभीविन्यास के माध्यम से पाठ-कभी खंडित वाक्य-क को झकझोरता है और सोचने के लिए विवश करता है। इसी प्रकार छायावाद में लय और सौंदर्य काव्यरचना की आधारभूमि हैं-, जबकि प्रयोगवाद में शिल्प स्वयं एक प्रयोगात्मक संरचना बनकर विघटन, असंगति और तनाव को भी अर्थ का हिस्सा बना देता है।

फिर भी यह द्वंद्व किसी कट्टर विरोध या पूर्ण विच्छेद का संकेत नहीं है, बल्कि हिंदी कविता की विकास प्रक्रिया का स्वाभाविक-चरण है। प्रयोगवाद छायावाद की संवेदनशीलता को नकारता नहीं; वह उसे आधुनिक संदर्भों में पुनःस्थापित करता हैथात्ुअर—त् भावात्मक गहराई को बनाए रखते हुए उसमें बौद्धिक प्रश्नाक ुलता, सामाजिक यथार्थ और अस्तित्वगत जटिलता जोड़ देता है। इस दृष्टि से छायावाद और प्रयोगवाद दो अलगअलग खेमे नहीं-, बल्कि एक ही परंपरा की दो अवस्थाएँ हैं पहली अवस्था में—अनुभूति सौंदर्य में रूपांतरित होती है, और दूसरी अवस्था में वही अनुभूति आधुनिक चेतना के दबावों में प्रश्न, विश्लेषण और प्रयोग का रूप ग्रहण कर लेती है। यही कारण है कि परंपरा और प्रयोग का यह द्वंद्व हिंदी कविता को अधिक व्यापक, अधिक आधुनिक और अधिक जीवंत बनाता है।

तालिका 1: छायावाद और प्रयोगवाद में परंपरा एवं प्रयोग का द्वंद्व

तुलनात्मक आधार	छायावाद	प्रयोगवाद
अनुभूति का स्वरूप	भावनात्मक आत्मानुभूति, अंतर्मुखी संवेदना	बौद्धिक एवं अस्तित्ववादी अनुभूति, प्रश्नाकुल चेतना
काव्य का केंद्र	प्रकृति-केंद्रित काव्य, मन और प्रकृति का तादात्म्य	मानव-केंद्रित काव्य, शहरी जीवन और सामाजिक यथार्थ
भाषा-शैली	संस्कृतनिष्ठ, संगीतात्मक और लयात्मक भाषा	बोलचाल की भाषा, गद्यात्मक प्रवाह और प्रतीकात्मक जटिलता
काव्य-शिल्प	छंदबद्धता, सौंदर्य और संरचनात्मक सामंजस्य	मुक्त छंद, शिल्पगत प्रयोग और संरचनात्मक विघटन
सौंदर्यबोध	कोमल, आदर्शवादी और भावप्रधान	यथार्थप्रधान, संघर्षजन्य और प्रश्नात्मक

कवि की दृष्टि	आत्मा और अनुभूति पर केंद्रित	समाज, मनुष्य और अस्तित्वगत संकट पर केंद्रित
समग्र प्रवृत्ति	परंपरा का सौंदर्यात्मक रूपांतरण	परंपरा का आधुनिक संदर्भों में पुनर्पाठ

शोधकर्ता द्वारा संकलित

5. छायावाद से प्रयोगवाद तक: निरंतरता का सूत्र

यह धारणा कि प्रयोगवाद ने छायावाद को पूर्णतः नकार दिया, साहित्यिक और आलोचनात्मक दृष्टि से एक सरलीकरण मात्र है। वस्तुतः प्रयोगवाद को छायावाद के प्रतिवाद के रूप में नहीं, बल्कि उसकी आंतरिक सीमाओं से उत्पन्न अगली विकास अवस्था- के रूप में समझा जाना चाहिए। छायावाद और प्रयोगवाद के बीच एक गहरी वैचारिक और संवेदनात्मक निरंतरता विद्यमान है, जो हिंदी कविता के विकासक्रम को रेखांकित करती है। छायावाद ने कविता को बाह्य यथार्थ की अनुकरणात्मक प्रवृत्ति से मुक्त कर व्यक्ति के अंतर्जगत्, आत्मानुभूति और संवेदनशील चेतना को केंद्र में स्थापित किया। इस प्रक्रिया में स्व की—की खोज 'अहं' अनुभूति, आत्मसंघर्ष और आत्मचेतनाछायावादी कविता का मूल स्वर बन गई।—

किन्तु यह प्रारंभिक छायावाद में प्रायः एकांत 'अहं', रहस्यात्मक और आदर्शवादी रूप में प्रकट होता है। बदलते सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों में यह आत्मकेंद्रित चेतना अपर्याप्त प्रतीत होने लगी। यहीं से प्रयोगवाद का उदय होता है, जो छायावाद द्वारा विकसित उसी को समाज 'अहं', इतिहास और आधुनिक जीवन की जटिलताओं के बीच रखकर जाँचता है। प्रयोगवादी कविता में अब आत्ममुग्ध या केवल 'अहं' अंतर्मुखी नहीं रहता, बल्कि वह सामाजिक संरचनाओं, सत्तासंबंधों-, शहरी तनावों और अस्तित्वगत संकटों से टकराता हुआ दिखाई देता है। इस प्रकार प्रयोगवाद छायावाद की आत्मानुभूति को नकारता नहीं, बल्कि उसे बाह्य यथार्थ के साथ संवाद में लाता है। सौंदर्यबोध और शिल्प की दृष्टि से भी यह निरंतरता स्पष्ट होती है। छायावाद की कोमल संवेदनशीलता और भावात्मक गहराई प्रयोगवाद में बनी रहती है, किंतु उसके अभिव्यक्ति रूप में परिवर्तन आ जाता है। जहाँ- छायावाद सौंदर्य और लय के माध्यम से अनुभूति को व्यक्त करता है, वहीं प्रयोगवाद उसी अनुभूति को प्रश्न, विश्लेषण और विघटन के माध्यम से प्रस्तुत करता है। यह परिवर्तन अनुभूति के स्तर पर नहीं, बल्कि उसके प्रस्तुतीकरण और बोध के स्तर पर घटित होता है।

रामस्वरूप चतुर्वेदी अपनी पुस्तक हिंदी कविता की आधुनिकता में लिखते हैं—

"प्रयोगवाद छायावाद का निषेध नहीं है, बल्कि उसकी अंतर्मुखी संवेदना का आत्मसमीक्षात्मक विस्तार है।"

(रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी कविता की आधुनिकता)

यह पंक्ति स्पष्ट करती है कि प्रयोगवाद, छायावाद की संवेदना को नकारता नहीं, बल्कि उसे नए वैचारिक धरातल पर विकसित करता है।

नंददुलारे वाजपेयी आधुनिक हिंदी कविता में कहते हैं—

"छायावाद में जो 'अहं' आत्मानुभूति का केंद्र था, वही प्रयोगवाद में समाज और यथार्थ से टकराने लगता है।"

(नंददुलारे वाजपेयी, आधुनिक हिंदी कविता)

यहाँ 'अहं' की निरंतरता स्पष्ट है—केवल उसका संदर्भ और संघर्ष-क्षेत्र बदलता है।

नामवर सिंह कविता के नए प्रतिमान में प्रयोगवाद को छायावाद से जोड़ते हुए लिखते हैं—

"नई कविता की जड़ें छायावादी संवेदना में हैं, अंतर केवल यह है कि अब वह संवेदना प्रश्नाकुल हो गई है।"

(नामवर सिंह, कविता के नए प्रतिमान)

यह कथन छायावाद और प्रयोगवाद के बीच भावात्मक निरंतरता को वैचारिक परिवर्तन के साथ जोड़ता है।

अज्ञेय तार सप्तक की भूमिका में स्पष्ट करते हैं—

"प्रयोग का अर्थ परंपरा से विच्छेद नहीं, बल्कि अनुभव की सच्चाई को नए रूप में जाँचना है।"

(अज्ञेय, तार सप्तक)

यह पंक्ति प्रयोगवाद की मूल भावना को स्पष्ट करती है—परंपरा के भीतर रहकर नया बोध रचना।

इस प्रकार छायावाद से प्रयोगवाद तक की यात्रा किसी टूटन या विच्छेद की नहीं, बल्कि निरंतरता और विस्तार की यात्रा है। प्रयोगवाद छायावाद की संवेदनशील चेतना को आधुनिक यथार्थ के कठोर अनुभवों से जोड़कर हिंदी कविता को अधिक व्यापक, अधिक आत्मसचेत और अधिक समकालीन बनाता है। इसी निरंतरता के कारण छायावाद और प्रयोगवाद को हिंदी कविता की विकास- धारा के दो परस्पर पूरक और अविभाज्य चरणों के रूप में देखा जाना चाहिए।

6. निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि छायावाद और प्रयोगवाद हिंदी कविता के दो परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि विकास-दूसरे के पूरक आंदोलन हैं। छायावाद ने हिंदी कविता को वह आत्मिक गहराई-क्रम की दृष्टि से एक, संवेदनात्मक सूक्ष्मता और सौंदर्यबोध प्रदान किया, जिसके बिना आधुनिक हिंदी कविता की कल्पना संभव नहीं थी। उसने कविता को बाह्य वर्णन से हटाकर आत्मानुभूति, प्रकृतिसंवेदना-, रहस्य और मानवीय करुणा की ओर उन्मुख किया तथा कविता को एक सशक्त भावात्मक आधार प्रदान किया। इस दृष्टि से छायावाद ने हिंदी कविता को एक ऐसी आत्मा—दी 'आत्मा', जो सौंदर्य, संवेदना और आध्यात्मिक खोज से अनुप्राणित थी। वहीं प्रयोगवाद ने इसी आत्मा को आधुनिक चेतना, बौद्धिक विवेक और यथार्थबोध से जोड़ने का कार्य किया। बदलते सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक संदर्भों में प्रयोगवादी कविता ने छायावादी आत्मपरकता की सीमाओं को पहचाना और कविता को आत्मसंतोष के क्षेत्र से निकालकर आत्मसमीक्षा और प्रश्नाकुलता की दिशा में अग्रसर किया। प्रयोगवाद ने यह स्पष्ट किया कि आधुनिक मनुष्य की चेतना केवल भावात्मक नहीं, बल्कि बिखरी हुई, द्वंद्वग्रस्त और वैचारिक रूप से जटिल है, और कविता को इस जटिलता का ईमानदार साक्ष्य बनना चाहिए। इस प्रकार प्रयोगवाद ने हिंदी कविता को आधुनिक जीवन की विसंगतियों, अस्तित्वगत संकटों और सामाजिक यथार्थ के अधिक निकट पहुँचाया। छायावाद और प्रयोगवाद के बीच परंपरा और प्रयोग का जो द्वंद्व दिखाई देता है, वह किसी प्रकार का साहित्यिक टकराव नहीं, बल्कि रचनात्मक विकास की प्रक्रिया है। परंपरा के बिना प्रयोग निराधार हो जाता है और प्रयोग के बिना परंपरा जड़ता का शिकार हो जाती है। छायावाद ने जिस संवेदनशीलता और सौंदर्यात्मक आधार का निर्माण किया, प्रयोगवाद ने उसी आधार पर नए शिल्प, नई भाषा और नई वैचारिक दृष्टि के प्रयोग किए। इस प्रकार प्रयोगवाद छायावाद का निषेध नहीं, बल्कि उसकी स्वाभाविक अगली कड़ी के रूप में सामने आता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि परंपरा और प्रयोग का यह द्वंद्व हिंदी कविता को स्थिर नहीं रहने देता, बल्कि उसे निरंतर गतिशील, आत्मपरिवर्तनशील और प्रासंगिक बनाए रखता है। यही द्वंद्व हिंदी कविता की जीवंतता, उसकी वैचारिक समृद्धि और उसकी विकासशीलता का सबसे बड़ा प्रमाण है। छायावाद और प्रयोगवाद दोनों मिलकर हिंदी कविता की उस आधुनिक पहचान को—गढ़ते हैं, जो संवेदना और चेतना, सौंदर्य और यथार्थ, आत्मा और विचारसभी को एक साथ समाहित करती है।—

संदर्भ सूची

1. शर्मा, रामविलास) .1975). *छायावाद और प्रगतिवाद*. नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन। :
2. शुक्ल, रामचंद्र) .2008). *हिंदी साहित्य का इतिहास* (नवीन संस्करणनागरी प्रचारिणी सभा :वाराणसी .(मूल कृति प्रकाशित 1929)
3. वाजपेयी, नंददुलारे) .1962). *छायावाद*. इलाहाबाद :लोकभारती प्रकाशन।
4. द्विवेदी, हजारीप्रसाद) .1958). *हिंदी साहित्यउद्भव और विकास* :. नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन। :
5. सिंह, बच्चन) .1986). *हिंदी कविता का दूसरा इतिहास*. नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन। :
6. सिंह, नामवर) .1980). *कविता के नए प्रतिमान*. नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन। :
7. पांडेय, मैनेजर) .1992). *साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका*. नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन। :
8. साही, विजयदेव नारायण) .1970). *नई कविता और अस्तित्व*. इलाहाबादसाहित्य भवन। :
9. मिश्र, शिवकुमार) .1988). *आधुनिक हिंदी कवितासंरचना और संवेदना* :. नई दिल्लीवाणी प्रकाशन। :
10. त्रिपाठी, विश्वनाथ) .1995). *आधुनिक हिंदी कविता का विकास*. नई दिल्लीवाणी प्रकाशन। :
11. रविभूषण) .2005). *आधुनिकता और हिंदी कविता*. नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन। :